इकाई 24 समुद्री व्यापार

इकाई की रूपरेखा

24.1 प्रस्तावना

24.2 इस्लाम का उदय और समुद्री व्यापार

24.3 मध्ययुगीन यूरोप मे व्यापार

24.4 भारत का समुद्री व्यापार

24.5 हिन्द महासागर मे पुर्तगाली व्यापार

- 24.5.1 हिन्द महासागर में पुर्तगालियों की मजबूत होती स्थिति
- 24.5.2 *कर्ताज* और *काफिला*
- 24.5.3 पन्द्रहवीं शताब्दी में भारतीय समुद्री व्यापार
- 24.5.4 भारतीय समुद्रपार व्यापार पर पुर्तगाली व्यापार का प्रभाव

24.6 यूरोपीय कम्पनियां और हिन्द महासागर व्यापार

- 24.6.1 भारत से निर्यात की जाने वाली वस्तुएं
- 24.6.2 भारत में आयातित वस्तुएं

24.7 भारतीय व्यापारियों का समुद्रपार व्यापार

24.8 सारांश

24.9 अभ्यास

24.1 प्रस्तावना

इस इकाई में मध्यकालीन संसार में समुद्री व्यापार का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया जाएगा। हम लगभग सातवीं शताब्दी से लेकर अठारहवी शताब्दी के मध्य तक के समय को अपनी चर्चा में समेटेंगे। इसमें अरब में इस्लाम के प्रवेश से लेकर बंगाल पर अंग्रेजों की विजय के बीच का कालखंड शामिल है। सातवी शताब्दी के आरंभ में इस्लाम का उदय होना व्यापार की दुनिया में एक महत्वपूर्ण हलचल थी। हमने अपनी यह चर्चा लगभग 1757 तक जारी रखी है। तभी एक महत्वपूर्ण घटना घटी – अंग्रेजो ने बंगाल को जीत लिया जिसके फलस्वरूप पहले से चले आ रहे समुद्री व्यापार की प्रमुख प्रवृत्तियों में आमूल बदलाव आ गया। सबसे पहले हम इस्लाम के उदय और विकास की बात करेंगे और यह देखेंगे कि इसका न केवल हिन्द महासागर बल्कि भूमध्यसागर से होने वाले समुद्री व्यापार पर भी प्रभाव पड़ा। इस दौरान समुद्री व्यापार पर मुसलमानों का बोलबाला रहा जो तीन शताब्दियों तक चला। अगले भाग में हम मध्ययुगीन यूरोप के व्यापार और खासतौर पर इस व्यापार मे भूमध्यसागर की भूमिका पर प्रकाश डालेंगे। यहां हम मध्ययुगीन यूरोप के आयात और निर्यात व्यापार में संलग्न वस्तुओं की भी चर्चा करेंगे। आरंभिक मध्यकाल के दौरान भारत के उस समय के समुद्रपार व्यापार का भी विश्लेषण किया जाएगा जब पश्चिम से व्यापार करने की अपेक्षा पूर्वी इलाके से व्यापार करने पर अधिक बल दिया जाता था।

हिन्द महासागर में पुर्तगालियों के आगमन की अलग से चर्चा की गई है। इसे देखने से यह भी पता चलता है कि पुर्तगाली हिन्द महासागर के व्यापार मे मामूली परिवर्तन ही कर पाए और वे इस क्षेत्र के व्यापार के ढांचे, दिशा और संगठन मे कोई आमूल परिवर्तन नही कर पाए। ऐसा लगता है कि हिन्द महासागर मे पुर्तगालियों की उपस्थिति प्रभावशाली और महत्वपूर्ण तो थी परंतु इस क्षेत्र में इसका कोई खास प्रभाव नही पड़ा। हिन्द महासागर के व्यापारिक संसार मे यूरोपीय कम्पनियों, खासतौर पर, डचों और अंग्रेजों, का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना थी। भारतीय समुद्रपार व्यापार में उनकी भूमिका पर भी विचार किया गया है। गौरतलब है कि ये कम्पनियां मुख्य रूप से तीन वस्तुओं – वस्त्र, सिल्क, शोरा – का निर्यात करती थी। बंगाल इन वस्तुओं का प्रमुख उत्पादक था। इसलिए स्वाभाविक रूप से इन दोनों कम्पनियों ने एशियाई व्यापार के लिए इसे ही मुख्य केन्द्र बनाया। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि इन सामानों को खरीदने के लिए यूरोपीयों को चांदी (बुलियन) और नगद धन लाना पड़ता था और इस प्रकार व्यापार संतुलन भारत/बंगाल के पक्ष में था। अंतिम भाग में भारतीय व्यापारियों के समुद्रपार व्यापार की चर्चा की गई है जिनमे इस काल के दौरान दिशात्मक परिवर्तन हुए थे। सबसे पहली बात यह कि भारतीय व्यापारी पूर्वी द्वीप समूहों तक ही सीमित थे लेकिन बाद में उन्हें इसे मजबूरन छोड़ना पड़ा और उन्होंने अपना ध्यान पश्चिमी व्यापार पर लगाया। परंतु यहां उन्हें लगभग अठारहवीं शताब्दी के आरंभ मे ईस्ट इंडिया कम्पनी और इसके कर्मचारियों की चुनौती का सामना करना पड़ा। इसी के साथ-साथ मुगल, फारसी और ऑटोमन साम्राज्यों के पतन के कारण अठारहवी शताब्दी के आरंभ में सूरत के विशाल मुगल बंदरगाह का पतन हुआ और भारतीय व्यापारियों के समुद्रपार व्यापार के लिए यह घातक सिद्ध हुआ। खासतौर पर गुजरात के समुद्रपार व्यापार के व्यापारियों पर इसका खासा असर पड़ा जो 16वीं शताब्दी से अठारवीं शताब्दी के मध्य तक समुद्रपार व्यापार में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे।

24.2 इस्लाम का उदय और समुद्री व्यापार

मध्ययुगीन संसार में इस्लाम का उदय एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसका समुद्री व्यापार पर व्यापक प्रभाव पड़ा। कई शताब्दियों तक व्यापक वाणिज्यिक तंत्र के विकास में अरब और मुसलमान व्यापारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वस्तुत: यूरोपियों के आगमन के काफी पहले, पूर्वी अफ्रीका और चीनी समुद्र के बीच हिन्द महासागर के तटीय क्षेत्रों में खूब व्यापार हुआ करता था जिस पर मुख्य रूप से मुसलमान नाविकों और व्यापारियों का बोलबाला था। सातवीं शताब्दी के मध्य से लेकर 15वीं शताब्दी के मध्य तक हिन्द महासागर के समुद्री व्यापार की सामान्य दिशा और संरचना बिलकुल स्पष्ट थी। दक्षिण चीन से पूर्वी भूमध्यसागर तक कई महादेशों को पार करते हुए यातायात का एक सिलसिला कायम था। इसके अलावा हिन्द महासागर में छोटी समुद्री यात्रा और दूरियां तय करके भी व्यापार किया जाता था।

ऐसा लगता है कि 10वीं शताब्दी के आरंभ और उसके बाद भी अरबी जहाज और व्यापारी चीन तक जाते और आते थे और बीच में पड़ने वाले बन्दरगाहों पर रुकते थे। वस्तुत: हिन्द महासागर को पार कर दक्षिण एशिया और चीन में मुसलमान व्यापारियों की उपस्थिति 8वीं शताब्दी के आरंभ में दर्ज की गई है। एशिया और पश्चिम के बीच होने वाले व्यापार के दो रास्ते थे जो लाल सागर और विभिन्न समुद्रों, नदियों और जमीनी रास्तों, फारस की खाड़ी, इराक और सीरियाई मरुस्थल से होकर गुजरते थे। इन दोनों ही रास्तों पर पहले उमय्यद खलीफाओं और बाद में अब्बासियों का पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण था। यहां तक कि भूमध्यसागर भी ईसाई प्रभुत्व वाले उत्तर और मुसलमान प्रभुत्व के दक्षिण के रूप में विभाजित था। अन्तत: व्यापारियों की गतिविधियों के जरिए ही इनके

Scanned with CamScanner